CHECKED 1973
Initial
अब्राहम
लिंकन

महान् मुक्तिदाता

अब्राहम लिंकन

"...श्रौर जिस से कि जनता के द्वारा, जनता के हित में, जनता का शासन पृथ्वी से मिट नहीं जायेगा .."

—लिंकन का गेटिसबर्ग भाषण

अब्राहम लिंकन

लकड़ी की एक कुटिया में जन्म लेकर राष्ट्रपति-भवन (ह्वाइट हाउस) तक प्रगति; एक वर्ष से कम की स्कूली पढ़ाई के बावजूद महान् वक्ता और लेखक के रूप में ख्याति; निराशाओं और पराजयों से घिरे रह कर भी उन से ऊपर उठ कर समूचे इतिहास के सब से अधिक सम्मानित और लोकप्रिय राजनीतिज्ञ के पद पर प्रतिष्ठा—यह है अब्राहम लिंकन के असाधारण जीवन का ब्यौरा।

केन्टकी में काठ की वह कुटिया, जहां जन्म हुआ था
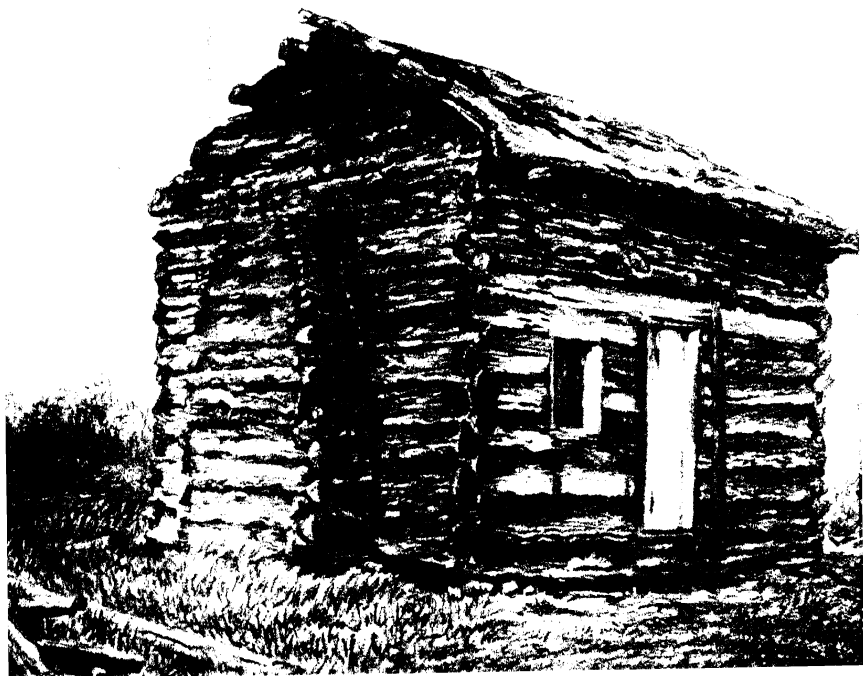
उन्होंने एक मित्र को बताया था कि "पचास मील के घेरे में जिस किसी भी पुस्तक का नाम मैंने सुना था उसे मैंने पढ़ डाला था।"

लिंकन की सहज-बुद्धि और हाजिर-जवाबी असाधारण थी, और उनमें कहानी कहने की बड़ी प्रतिभा थी। इन गुणों के कारण देहाती समाजों में या दँवरी-चौपाल के समय उनकी बड़ी माँग रहती थी, और अपनी बातों या चुटकुलों से वह देहाती लोगों का मनोरंजन करते रहते थे। कानून का पेशा अपनाने की प्रेरणा उन्हें भाषण की प्रतिभा और न्याय-प्रेम के कारण ही मिली। किन्तु उनके पास न तो कानून की अपनी पुस्तकें थीं, न उन्हें खरीदने के लिए पैसा ही, अतः इंडियाना के कानूनों के सम्बन्ध में एक पुस्तक देखने के लिए वह अक्सर बारह मील दूर एक परिचित के दफ्तर में जाया करते थे।

उन्नीस वर्ष की आयु में लिंकन का कद छः फुट चार इंच का हो गया था। उनकी भुजा और टाँगें असाधारण लम्बी थीं और हाथ-पैर बहुत बड़े-बड़े। उन में तीन आदमियों के बराबर बल था; वह दो शहतीर उठा कर ले जा सकते थे, और अपने इलाके के किसी भी पुरुष या युवक से अधिक तेज़ दौड़ सकते थे और किसी को भी कुश्ती में पछाड़ सकते थे।

मिसिसिपी की यात्रा

सन् १८२८ में, उन्नीस वर्ष की आयु में, लिंकन एक पड़ोसी की माल लादने की नाव लेकर मिसिसिपी नदी से अठारह सौ मील की यात्रा करके न्यू और्लियन्स पहुँचे। नाव में वह सब्ज़ियाँ और सूअर लादकर न्यू और्लियन्स के कपास की खेती करने वाले ज़मींदारों में बेचने के लिए ले गये थे।

दो वर्ष बाद लिंकन-परिवार बैल-गाड़ियों में सब सामान लाद कर इलिनौय चला गया। वहाँ लकड़ी का एक नया घर तैयार किया गया। अब्राहम ने दस एकड़ भूमि घेरने को बाड़ बनाने के लिए लकड़ी चीरी। इसी लिए वर्षों बाद जब वह संयुक्तराज्य अमेरिका के
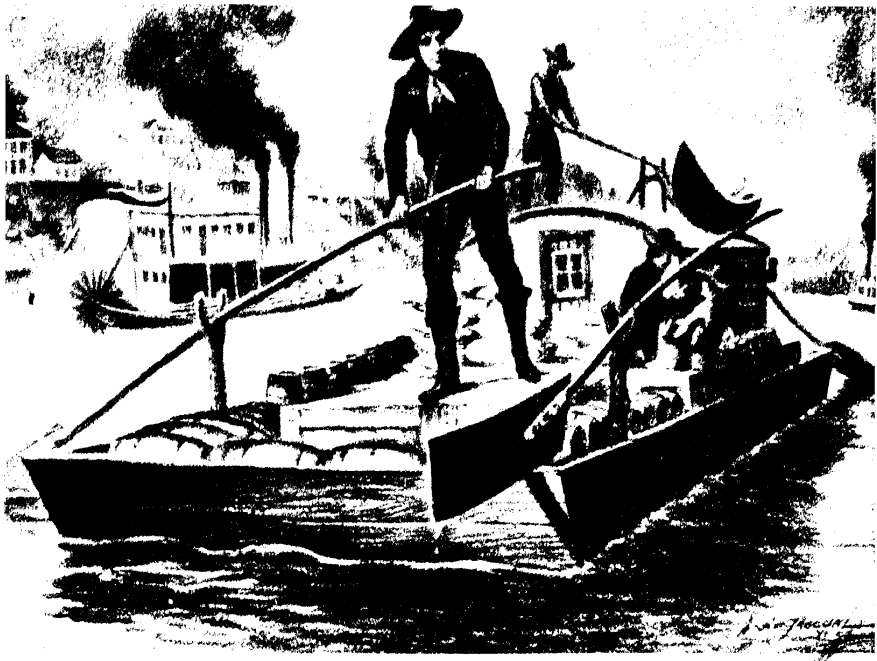
मिसिसिपी में चौड़ी नाव को चलाते हुए

राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार खड़े हुए तब उन्हें उपेक्षा से 'चिराई-मजूर' कहा जाता था। उसी जाड़े में उन्होंने चौदह सौ लकड़ियाँ चीर कर एक पड़ोसी स्त्री को उससे सिलायी गयी एक पतलून की सिलाई चुकाई थी। अगले बसन्त में लिंकन माल ढोने वाली नाव लेकर दुबारा न्यू ऑर्लियन्स गये। यहाँ उन्होंने पहली बार नीग्रो दासों को साँकलों से बाँध कर रखे हुए और नीलाम किये जाते देखा। इस दृश्य से उन्हें बड़ी ग्लानि हुई और उन्होंने तभी ठान लिया कि जब भी अवसर होगा वह दास-प्रथा के विरुद्ध लड़ेंगे। उस समय उन्हें स्वप्न में भी गुमान न था कि इतिहास में उनका नाम इस उत्पीड़ित जाति को मुक्ति दिलाने वाले के रूप में अमर हो जायेगा।

युद्ध, राजनीति और व्यवसाय

लौटकर लिंकन इलिनौय के न्यू सलेम नगर में बस गये। यहाँ वह कई वर्ष रहे और छोटे-मोटे धन्धे करते रहे। अनन्तर उन्होंने

डेंटन ओफुट की दुकान में नौकरी कर ली। यहाँ उन्हें 'कपड़े के एक थान पर सिर रखे मेज़ पर लेट कर' कर्कहम का व्याकरण पढ़ने का और देहाती दुकान में जमा होने वाले लोगों के सामने अपनी कहानियां-चुटकुले सुनाने का समय मिल जाता। यहीं उन्हें 'ईमानदार एब' की उपाधि मिल गयी जो बराबर उनके साथ रही। कहा जाता है एक बार वह रेज़गारी देने में छः सेंट की भूल का सुधार करने के लिए दो मील चल कर गये थे। किन्तु साल भर बाद दुकान बैठ गयी, और बाईस वर्ष के लिंकन बेकार हो गये।

'ब्लैक हॉक' युद्ध के समय न्यू सलेम के स्वयंसेवक रक्षा-दल ने लिंकन को अपना कप्तान चुना, पर उनके संग्राम-क्षेत्र तक पहुँचने से पहले ही लड़ाई समाप्त हो गयी।

राजनीति में प्रवेश करने के आकांक्षी लिंकन ने सन् १८३२ के बसन्त में घोषित किया कि वह शरद में राज्य की विधान-सभा के चुनाव में उम्मीदवार होंगे। यद्यपि उन्हें अपने पड़ोस के प्रायः सभी वोट मिले, फिर भी वह चुने नहीं गये।

इसी समय एक मिस्टर बेरी के साझे में उन्होंने न्यूसलेम में तीन छोटी दुकानें खरीद कर एक बड़ी दुकान आरम्भ की। माल सब उधार खरीदा गया। सन् १८३३ के शुरू में ही यह दुकान भी १२०० डालर का ऋण चढ़ जाने पर बन्द हो गयी। कुछ ही दिन बाद बेरी की मृत्यु हो गयी। लिंकन ने सारे ऋण का बोझ अपने ऊपर ले लिया। दीवाला घोषित करके वह ऋण से मुक्त हो सकते थे, पर उन्होंने पूरा ऋण चुकाया—यद्यपि ऐसा करने में उन्हें पन्द्रह वर्ष परिश्रम और किफ़ायत करनी पड़ी।

कुछ समय बाद लिंकन को ज़िले (काउण्टी) के तत्कालीन सर्वेयर—जॉन कैल्हून के सहायक का पद मिल गया। साथ ही वह स्थानीय पोस्ट मास्टर भी नियुक्त हो गये। वहाँ डाक बहुत कम आती जाती थी, अतः लिंकन 'डाक को अपनी टोपी के अन्दर रख कर' घूमते थे।

इलिनौय राज्य की विधान-सभा में

सन् १८३४ में, जब राज्य विधान-सभा के लिए दूसरी बार उम्मीदवार हो कर लिंकन एक सभा में भाषण देने के लिए खड़े हुए, तब एक श्रोता ने उन्हें देखकर कहा,—"क्या पार्टी को इससे अच्छा व्यक्ति नहीं मिल सकता था ?" किन्तु लिंकन का भाषण सुनने के बाद उसने स्वीकार किया कि लिंकन की जानकारी बाकी सब उम्मीदवारों की सम्मिलित जानकारी से अधिक थी। इस बार लिंकन चुनाव में सफल हो गये और इसके बाद तीन बार और भी चुने गये।

राज्य के तत्कालीन केन्द्र वैंडालिया जाने के लिए लिंकन ने एक मित्र से उधार ले कर एक बना-बनाया नया सूट खरीदा। वहीं उनका स्टीवन ए-डगलस से परिचय हुआ, जो तब से वर्षों तक अनेक क्षेत्रों में उनके प्रतिस्पर्द्धी होते रहे। सन् १८३६ में सत्ताइस वर्ष की आयु में लिंकन वकालत परीक्षा पास करके नयी राजधानी स्प्रिंगफ़ील्ड चले गये। मँगनी के घोड़े पर सवार होकर वह एक परिचित व्यक्ति मिस्टर स्पीड की दुकान पर पहुँचे। वहाँ उन्होंने क्रिसमस तक उधारे बिस्तर और कमरा देने की माँग की। उन्हें आशा थी कि तब तक उनकी वकालत चल निकलेगी। उन्होंने कहा : "लेकिन अगर मुझे सफलता न मिली तो नहीं कह सकता कि उधार कभी चुका सकूँगा या नहीं।" स्पीड ने दुकान के ऊपर अपने कमरे में अपने बड़े पलंग पर सोने की अनुमति लिंकन को दे दी। लिंकन ने घोड़े पर से अपने बस्ते उतार कर ऊपर के कमरे में पटक दिये और नीचे आ कर मुस्कराते हुए कहा--"लीजिए, मिस्टर स्पीड, मैं जम गया।"

इलिनौय की विधान-सभा में पहले-पहल एक राजनीतिज्ञ के रूप में लिंकन की प्रतिभा और बुद्धि विकसित हुई। वह जन-साधारण

इलिनौय की अदालत में वकालत करते हुए

के बहुत निकट रहते, और उनकी धारणा थी कि सार्वजनिक मामलों में उचित मार्ग का सबसे सही संकेत जन-साधारण की सम्मति से ही मिलता है। राज्य में रेलों, नहरों और बैंकों की स्थापना के लिए उन्होंने बड़ा परिश्रम किया।

इन आठ वर्षों में लिंकन वकालत भी करते रहे। घोड़े पर सवार हो कर एक कचहरी से दूसरी में ज़िला जज के साथ-साथ दौरा करते हुए वह सारे प्रदेश में प्रसिद्ध और सम्मानित हो गये। सन् १८४३ में उन्होंने विलियम हर्नडन के साथ वकालत का साझा कर लिया। लिंकन सिद्धान्ततः केवल ऐसे पक्ष की पैरवी करते थे जिसकी सम्पूर्ण सच्चाई और औचित्य में उनका पूरा विश्वास हो। एक बार उन्होंने एक मुकद्दमे में गवाहियों के चलते-चलते पैरवी करना छोड़ दिया क्योंकि उन्हें मालूम हो गया कि जिस पक्ष की ओर से वह खड़े हैं वह

प्रेसिडेन्ट और उनका परिवार

न्याय का पक्ष नहीं है। कचहरी में वह प्रायः ऐसे चुटकुले सुनाते रहते थे जिनसे न केवल वातावरण हल्का रहता था वरन् उनका पक्ष भी स्पष्ट होता जाता था। शीघ्र ही वह इलिनौय के श्रेष्ठ वकीलों में गिने जाने लगे।

युवावस्था में लिंकन का एन रुटलेज से प्रेम था। उनकी मृत्यु हो जाने पर लिंकन को इतना दुख हुआ कि उनके मित्रों को यह चिन्ता हो गयी कि कहीं वह पागल न हो जायें। वर्षों बाद, सन् १८४२ में, कैंटकी से आयी हुई सुन्दरी युवती मेरी टॉड के पाणि-ग्रहण के लिए लिंकन और डगलस में प्रतिस्पर्द्धा हुई। विजय लिंकन की हुई और ४ नवम्बर, १८४२ को उनका विवाह हो गया। उनके चार पुत्र हुए जिनमें से एक रौबर्ट टी० लिंकन बाद में ब्रिटेन में संयुक्तराज्य अमेरिका के राजदूत हुए।

लिंकन और दास-प्रथा

जिस समय लिंकन दो वर्ष के लिए संयुक्तराज्य अमेरिका की प्रतिनिधि-सभा (हाउस आफ़ रेप्रेजेंटेटिव्ज़) के सदस्य हुए, उस समय दास-प्रथा का प्रश्न राष्ट्र और राज्यों की राजनीति की मुख्य समस्या बना हुआ था।

लिंकन ने घोषित किया : "अगर दास-प्रथा अनुचित नहीं है, तो कुछ भी अनुचित नहीं है।" लिंकन ने टैक्सास से ओरेगान तक के प्रदेश से दास-प्रथा को दूर रखने की योजना के पक्ष में घोर आन्दोलन किया। जैसा कि उन्होने स्वंय कहा : "इस योजना के लिए मैंने कम से कम चालीस बार मत दिया, पर सब व्यर्थ।" उन्होंने यह भी यत्न किया कि कोलम्बिया डिस्ट्रिक्ट में दासों को मुक्त कर दिया जाये, पर उसमें भी वह सफल नहीं हुए।

संसद के लिए वह दुबारा नहीं चुने गये, अतः उन्होंने फिर वकालत शुरू कर दी। उन्हें धन की बहुत जरूरत थी। अपने परिवार का भार वहन करने के अलावा वह पिता को, अपनी विमाता को और एक सौतेले भाई को खर्चा भेजते थे, और पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने पुराने घर को रेहन से भी छुड़ाया। "कन्धों पर एक भूरी शाल ओढ़े, कागज़ों और कपड़ों से भरा हुआ एक थैला, और डोरी से बँधा हुआ एक बिना दस्ते का पुराना हरा छाता लिये, वह घोड़े पर दौरा किया करते थे।"

सन् १८५४ में कैन्सास-नेब्रास्का विधेयक (बिल) पास हो कर कानून बन गया। यह विधेयक सेनेट में डगलस ने पेश किया था, और इसके अनुसार कैन्सास और नेब्रास्का के नये राज्यों को यह अधिकार दिया गया था कि संघ में सम्मिलित हो कर वे स्वयं इसका निर्णय करेंगे कि उन में दास-प्रथा का चलन हो या नहीं। उत्तरी राज्यों ने अनुभव किया कि इस नये कानून से दास-प्रथा का प्रवेश विस्तीर्ण पश्चिमोत्तर प्रदेश में भी हो जायेगा।

इसी समय रिपब्लिकन पार्टी का संगठन हुग्रा, जिसके संस्थापकों में लिंकन भी थे। फ़िलाडेल्फ़िया में सन् १८५६ में इस दल का जो प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन हुग्रा, उसमें उप-राष्ट्रपति के पद के लिए लिंकन का नाम लिया गया, पर उन्हें मनोनीत नहीं किया गया।

सेनेट-सदस्य स्टीवन ए० डगलस ने इलिनौय लौट कर जोरों से ग्रपने कैन्सास-नेब्रास्का विधेयक का समर्थन किया। इस पर लिंकन ने तीन घण्टे के एक भाषण में उसका जवाब दिया, ग्रौर इस प्रकार वे मानव-स्वतन्त्रता के महान् ग्रादर्श के पक्षपोषक के रूप में सामने ग्राये। सन् १८५८ में इलिनौय के डेमोक्रेट दल ने सेनेट के लिए डगलस को मनोनीत किया ग्रौर रिपब्लिकन दल ने घोषणा की कि "सेनेट के लिए हमारे प्रथम ग्रौर एकमात्र मनोनीत प्रतिनिधि सम्माननीय ग्रब्राहम लिंकन है।" लिंकन का स्वीकृति-भाषण सुनने के लिए स्प्रिंगफील्ड का राज्य-भवन दर्शकों से खचाखच भरा था ग्रौर वे खूब तालियां बजा रहे थे। सत्य ग्रौर न्याय से परिपूर्ण उनके शब्दों की गूंज हम ग्राज भी सुन सकते हैं : "ग्रपने ही भीतर फूट डाल कर कोई घर बना नहीं रह सकता। मेरा विश्वास है कि यह शासन चिरकाल तक ग्राधा स्वतन्त्र ग्रौर ग्राधा गुलाम हो कर नहीं टिक सकता।"

लिंकन ने डगलस को चनौती दी कि उनके साथ इस विषय पर विवाद कर लें। सात वाद-विवाद हुए। इलिनौय के जिन-जिन नगरों में ये विवाद हुए, वहाँ बड़ी दूर-दूर से लोग उन्हें सुनने के लिए ग्राये। डगलस की दलीलें सिलसिलेवार ग्रौर प्रभावोत्पादक थीं; लिंकन की दो टूक सीधी, सहज ग्रौर जनता के मर्म को छू लेने वाली। ग्रपने विषय में लिंकन ऐसे तन्मय हो जाते कि उनके स्वर में एक ग्रद्भुत गम्भीर ग्रौर सुन्दर गूँज ग्रा जाती, उनकी उदास ग्राँखें दीप्त हो उठतीं ग्रौर उनका लम्बा ग्रनगढ़ शरीर एक ग्रनोखी भव्यता पा लेता...।

डगलस का कहना था कि लोगों को यह निर्णय करने का ग्रधिकार होना चाहिए कि वे दास रखेंगे या नहीं। लिंकन का उत्तर था

कि यह निर्णय करने का अधिकार किसी मनुष्य को नहीं है कि वह दूसरे मनुष्य को अपनी सम्पत्ति बनाये; फिर दास-प्रथा गलत है और उसका उन्मूलन होना ही चाहिए। यद्यपि सेनेट के चुनाव में डगलस सफल हुए, तथापि लिंकन को शीघ्र ही इससे भी बड़ा सम्मान मिलने वाला था—संयुक्तराज्य अमेरिका के राष्ट्रपति चुने जाने का।

संयुक्तराज्य अमेरिका के राष्ट्रपति

डगलस से वाद-विवादों के बाद एक महान् वक्ता के रूप में लिंकन की ख्याति सारे देश में फैल गई, और उन्हें संयुक्तराज्य अमेरिका के हर प्रदेश से व्याख्यान देने के निमन्त्रण आने लगे। फरवरी १८६० में उन्होंने न्यूयार्क के कूपर इन्स्टिट्यूट में जो भाषण दिया था उसके बारे में 'न्यूयार्क ट्रिब्यून' ने लिखा था "न्यूयार्क की सभा में कभी किसी के पहले भाषण का इतना गहरा प्रभाव नहीं हुआ।" यह भाषण छपने पर बहुत जगह उद्धृत हुआ, और लिंकन के राष्ट्रपति चुने जाने में इससे बड़ी सहायता मिली।

ज्यों-ज्यों १८६० में होने वाला राष्ट्रपति का चुनाव निकट आने लगा, उत्तर और दक्षिण में कटुता बढ़ने और फैलने लगी। ६ नवम्बर, १८६० को लिंकन संयुक्तराज्य अमेरिका के सोलहवें राष्ट्रपति चुन लिये गये। अगली फरवरी से पहले ही सात दक्षिणी राज्यों ने संघ से अलग हो कर "अमेरिकी सम्मिलित राज्य" (कानफेडरेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका) की स्थापना कर ली और जेफ़र्सन डेविस को अपना प्रेजिडेंट चुन लिया।

४ मार्च सन् १८६१ को अपने समारम्भ भाषण में लिंकन ने घोषित किया:—"इन राज्यों (संयुक्तराज्यों) का संघीकरण सदा के लिए हुआ है। कोई राज्य केवल अपने प्रस्ताव के आधार पर न्यायत: संघ से अलग नहीं हो सकता।" अनन्तर उन्होंने कहा:—"देश ने अपनी नौका का कर्ण-धार मुझे बनाया है, मैं उसे पार लगाकर रहूँगा।" ऐसे अनेकों थे जो सिर हिलाकर कहते:—"क्या यह बेढंगा बनचारी सच-मुच हमारी नाव को पार लगा सकेगा ?"

सदैव दूसरों का ध्यान रखने वाले, कोमल और मृदु स्वभाव के, लेकिन एक बार निश्चय कर लेने पर चट्टान की तरह अडिग, वर्षों की यातना और पराजय के बावजूद अपने अनुयायियों को प्रेरणा देने और उनकी निष्ठा बनाये रखने में समर्थ, अब्राहम लिंकन ने अन्त में प्रमाणित कर दिया कि वह अमेरिका के सबसे अधिक लोकप्रिय और समादृत राजनीतिज्ञ हैं। उन्हें जन-साधारण से स्नेह था और बदले में लोग लिंकन पर पूरा भरोसा रखते थे। उनका मन्त्रिमण्डल अक्सर उन्हें सुझाता था कि वह अपने राजकीय पत्र अधिक परिमार्जित भाषा में लिखा करें, किन्तु वह अपनी सरल भाषा में ही लिखते रहे। वह यह कह देते कि 'लोग समझ लेंगे'।

गृह-युद्ध का आरम्भ

वर्जिनिया, आर्कैन्सौ, टेनेसी और उत्तरी कैरोलाइना भी दक्षिणी फेडरेशन में सम्मिलित हो गये। १२ अप्रैल सन् १८६१ को दक्षिणी कैरोलाइना के फ़ोर्ट समटर पर फहराती हुई संघ की पताका पर गोली चलाकर सम्मिलित (दक्षिणी) राज्यों ने गृह-युद्ध आरम्भ कर दिया।

लिंकन ने आरम्भ में ही घोषित कर दिया कि उनका युद्ध दास-प्रथा के विरुद्ध नहीं बल्कि संघ की रक्षा के लिए है। उन्होंने ७५,००० स्वयंसेवी सैनिकों के लिए अपील की और जौर्ज बी० मैक्लैलन को उत्तरी सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त किया। जुलाई में बुलरन की लड़ाई में, जो गृह-युद्ध की पहली वास्तविक लड़ाई थी, दक्षिणी सेना की विजय हुई। उत्तरी सेनाएं इस आघात से सन्न रह गयीं। जनरल मैक्लैलन महीनों तक एक बहुत अच्छी सेना का संगठन करके उसे सैनिक प्रशिक्षण द्वारा तैयार करने में लगे रहे, लेकिन दक्षिण पर उन्होंने कोई चढ़ाई नहीं की। उत्तरी सेनाओं की पहली जीत जनरल यू० एस० ग्रांट ने ही प्राप्त की। सन् १८६२ के शीतकाल के आरम्भ में उन्होंने फ़ोर्ट हेनरी और फ़ोर्ट डोनेलसन पर कब्जा कर लिया। अन्त में लिंकन ने मैक्लैलन को हटाकर ग्रांट को उत्तरी सेनाओं का सेनापति बनाया।

किन्तु उत्तर की हार पर हार होती रही । लिंकन के छोटे लड़के विली की इसी समय मृत्यु हो गयी और जनता के दुःख-कष्टों के प्रति उनकी करुणा और बढ़ गयी । वह प्रायः छावनियों, अस्पतालों और बन्दीगृहों का दौरा करते रहते और सैनिकों तथा उनके अधिकारियों से बातचीत करके उनकी श्रद्धा और उनका विश्वास प्राप्त कर लेते । कहा जाता है कि युद्ध के दौरान में बराबर उनकी मेज पर बाइबिल रखी रहती और वह उसे प्रायः पढ़ते, और बहुधा रात-रात भर प्रार्थना करते रहते ।

दासों की मुक्ति

यद्यपि लिंकन ने संघ की रक्षा को युद्ध का पहला उद्देश्य माना था, तथापि सन् १८६२ तक उन्होंने समझ लिया कि दूसरा महान् उद्देश्य दास-प्रथा का अन्त होना चाहिए । हज़ारों दास भाग कर उत्तर के प्रदेशों में जा रहे थे । जुलाई १८६२ में कांग्रेस ने कानून बनाकर इन भागकर आये हुए दासों को उत्तरी सेना में भरती होने का अधिकार दे दिया और उन्हें तथा उनके परिवारों को मुक्त कर दिया । आरम्भ में लिंकन ने प्रयत्न किया कि दासों को क्रम से मुक्ति दी जाय और उनके स्वामियों को क्षति-पूर्ति के रूप में सरकार से कुछ दिलाया जाय, लेकिन इस योजना को दक्षिण ने स्वीकार नहीं किया । फिर अपने शान्त और संजीदा ढंग से लिंकन ने, बिना अपने मन्त्रिमण्डल से परामर्श किये ही, अपनी दास-मुक्ति की घोषणा का प्रभावशाली मसविदा तैयार कर लिया । लेकिन समय अभी इस घोषणा के प्रसार के अनुकूल नहीं था । सेडार माउन्टेन और बुलरन की दूसरी लड़ाई में उत्तरी सेनाओं की हार हुई थी और अब वे जनरल ली का सामना कर रही थीं जो पोटोमैक नदी पार करके मेरीलैंड में बढ़ आये थे । लिंकन ने अपने मन्त्रिमण्डल को सूचना दी कि उन्होंने मन ही मन ईश्वर के सम्मुख यह प्रतिज्ञा की थी कि अगर आसन्न लड़ाई में उनकी सेना की विजय होगी तो वह मान लेंगे कि ईश्वर ने उनके प्रश्नों का उत्तर दासों के पक्ष में दे दिया है । १७ सितम्बर

को एण्टीटैम की लड़ाई में उत्तरी सेनाओं की विजय हुई। पांच दिन बाद लिंकन ने दास-मुक्ति की प्रारम्भिक घोषणा जारी करके चालीस लाख दासों को "पहली जनवरी १८६३ को और तदनन्तर सदा के लिए मुक्त" घोषित कर दिया।

नववर्ष दिवस पर जब लिंकन ने घोषणा के अन्तिम मसविदे पर हस्ताक्षर किये तब उन्होंने कहा—"इतिहास में मेरा नाम कभी लिया जायेगा तो मेरे इसी कार्य के लिए। मेरी समूची आत्मा इसमें है।"

किन्तु युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ था। फ़ेडरिक्सबर्ग और चांसलर्सविल में उत्तरी सेनाओं की करारी हार हुई, किन्तु गेटिसबर्ग और विक्सबर्ग में उन्हें विजय मिली। लिंकन ने अपने कमरे की दीवार पर संयुक्त राज्य अमेरिका का एक बड़ा नक्शा लगा रखा था, जिस पर वह सेनाओं की गतिविधियों का अनुसरण करते रहते थे। संग्राम की गति का वह दिन-रात अध्ययन करते, सैन्य-संचालन की पुस्तकें पढ़ते, सेनापतियों के साथ चालों की योजनाएँ बनाते और बहुधा उनका निर्देशन भी करते। लेकिन उनका हृदय बराबर संग्राम भूमि में जूझने वाले सैनिकों और उनके चिन्ताग्रस्त परिवारों की ओर लगा रहता। उनके चेहरे पर चिन्ता की रेखाएँ गहरी होती जातीं और उनकी आँखें धंसती जातीं; वह कहा करते—"मुझे लगता है कि मैं फिर कभी हसूँगा नहीं।" एक बार जब संघ-सेना के एक सेनापति ने बीस भगोड़े सैनिकों को मृत्यु-दण्ड देने का उनसे अनुरोध किया तब उन्होंने कहा—"संयुक्त राज्य अमेरिका में पहले ही बहुत अधिक शोक-ग्रस्त विधवाएँ हैं। ईश्वर के लिए मुझे उनकी संख्या बढ़ाने को मत कहो, क्योंकि मैं कदापि वैसा नहीं करूँगा।"

सन् १८६३ की शरद ऋतु में चैटानूगा की लड़ाई में उत्तरी सेनाएँ विजयी हुईं। अगले बसन्त में जनरल ग्रांट ने विल्डरनेस, स्पाट-सिल्वानिया और कोल्ड हार्बर में काफ़ी क्षति के बाद रिचमंड पर आक्रमण शुरू किया। लिंकन ने उत्तर से और सैनिक मांगे। इस समय तक जनता को लिंकन पर पूरी श्रद्धा हो गयी थी और उसने

बड़े उत्साह से उनकी माँग का उत्तर दिया "हम तीन लाख की संख्या में आते हैं, पिता अब्राहम !" लिंकन फिर राष्ट्रपति चुने गये।

जनवरी १८६५ की संसद में लिंकन के जीवन का स्वप्न वास्तविकता में परिणत हो गया। संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान में संशोधन करके देश के किसी भी भाग में दास-प्रथा का निषेध कर दिया गया।

४ मार्च १८६५ को दूसरे समारम्भ भाषण में लिंकन ने कहा—"हमारी हार्दिक कामना है—हम सच्चे हृदय से प्रार्थना करते हैं—कि युद्ध का यह अभिशाप जल्दी ही दूर हो जाय . . . किसी के प्रति द्वेष के बिना, सभी के प्रति उदार भाव रखते हुए, ईश्वर हमें जो सत्य मार्ग दिखाता है उस पर अटल रहते हुए, हम उस कार्य को पूरा करने का प्रयत्न करें जिसे हमने उठाया है; देश के घावों की मरहम-पट्टी करें, जिसने युद्ध की चोट सही है उसके लिए, उसकी विधवा के लिए और उसकी अनाथ सन्तान के लिए चिंतित हों; आपस में और अन्य सभी राष्ट्रों के साथ न्यायपूर्ण और स्थायी शान्ति की प्राप्ति के लिए सभी सम्भव उपाय करें।"

जब तक जनरल शर्मन ने जौर्जिया को पार नहीं कर लिया, ३ अप्रैल १८६५ को उत्तरी सेनाओं ने रिचमण्ड में प्रवेश नहीं कर लिया और ९ अप्रैल को आपोमाटोक्स कोर्ट हाउस में जनरल ली ने जनरल ग्रांट के सम्मुख आत्म-समर्पण नहीं कर दिया तब तक युद्ध समाप्त नहीं हुआ। जनरल ली के आत्म-समर्पण की खबर ह्वाइट हाउस में पहुँची तब लिंकन अपने मन्त्री-मण्डल से मिले और उनके कहने पर सभी ने चुपचाप अश्रुपूर्वक घुटने टेक कर ईश्वर को धन्यवाद दिया।

देश में खुशी की लहर दौड़ गयी। नीली और भूरी सेनाओं का युद्ध अन्ततोगत्वा समाप्त हो गया था। संघ की रक्षा हो गयी थी। दास मुक्त हो गये थे। अब्राहम लिंकन का एक महान् लोक-बन्धु और एक उत्पीड़ित जाति के मुक्ति-दाता के रूप में अभिनन्दन हुआ। लिंकन रिचमंड गये। यह नगर कुछ समय पहले तक दक्षिणी सम्मिलित

राज्य की राजधानी थी। वहाँ एक नदी के घाट पर खुदाई करते हुए नीग्रो मजदूरों की एक टोली उन्हें मिली। उन्हें देखते ही उनमें से एक बूढ़ा नीग्रो लपक कर आगे आया और पुकार कर बोला—"भगवान् का धन्यवाद है कि एक महान् पैगम्बर प्रकट हुआ है। अन्त में वह अपनी सन्तानों को उनके बन्धन से मुक्त करने के लिए अवतरित हुए हैं! भगवान् की जय हो!" घुटने टेक कर उसने लिंकन के पैर चूम लिये। घुटने टेके हुए नीग्रो दल से घिरे हुए लिंकन ने कहा—"मेरे सामने घुटने मत टेको। केवल भगवान् के सामने घुटने टेको और मुक्ति के लिए उसी को धन्यवाद दो।"

दक्षिण के प्रति लिंकन के मन में कोई वैमनस्य नहीं था। दक्षिणी सैनिकों और सेनापतियों की वीरता की उन्होंने प्रशंसा की। स्टोनवाल जैक्सन को उन्होंने एक बहादुर और ईमानदार सिपाही कहा, और एक बार जनरल ली का चित्र देखते हुए उन्होंने कहा—"यह एक वीर और उदात्त मनुष्य का चेहरा है।"

गेटिसबर्ग में भाषण देते हुए

"अब वे युग-युग की निधि हो गये हैं"

उदार हृदय, उदार-चेता और दयालु लिंकन ने जनता के हृदय में वह स्थान पा लिया था जो कि संसार के इतिहास में इने-गिने व्यक्तियों ने ही पाया है। एक बार उन्होंने कहा था—"ईश्वर को अवश्य साधारण जन से प्रेम है, तभी तो उसने इतनी संख्या में उन्हें बनाया है।" किसी ने कहा है कि लिंकन ने कभी किसी मित्र को नहीं छोड़ा, न कभी किसी की भलाई करने के मौके से चूके, चाहे वह कितनी ही छोटी बात रही हो। राष्ट्रपति के पद से उनका अन्तिम कार्य भी करुणा से ही प्रेरित था और यह था युद्ध क्षेत्र से भागने के लिए मृत्युदण्ड पाये हुए एक सैनिक को क्षमा-दान। क्षमा-पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए लिंकन ने कहा—"मेरा विचार है कि यह जवान धरती के नीचे की अपेक्षा धरती के ऊपर रह कर अधिक उपयोगी हो सकता है।"

१४ अप्रैल, १८६५ को, जिस दिन उन्होंने इस क्षमा-पत्र पर हस्ताक्षर किये थे, उसी शाम को वह सपत्नीक फ़ोर्ड थियेटर में एक नाटक देखने गये थे। उनका आसन राष्ट्रीय पताकाओं से सजा हुआ था। लड़ाई के अन्त का, विजय का और शान्ति की आशा का उल्लास चारों ओर था। १० बज कर २० मिनट पर जब सभी आँखें रंग-मंच की ओर लगी हुई थीं, हठात् पिस्तौल की गोली का शब्द सुनाई दिया। लिंकन अपनी कुर्सी में आगे लुढ़क गये, हत्यारा रंग-मंच की ओर लपका। उसका पैर एक झण्डे में अटक गया और वह गिरा, लेकिन फिर भी मंच के पिछले द्वार तक पहुँचने में सफल हुआ और वहाँ से घोड़े पर सवार होकर भागा। श्रीमती लिंकन चिल्लायीं—"राष्ट्रपति की हत्या हो गयी।" लिंकन को उठाकर सामने के घर में ले जाया गया जहाँ वह रात भर निश्चल पड़े रहे। सारा वाशिंगटन चिन्तित भाव से उनकी प्राण-रक्षा के लिए प्रार्थना करता रहा। लेकिन दूसरे दिन प्रातःकाल बिना फिर से चेतना प्राप्त किये उनकी मृत्यु हो गयी। उनके अभिन्न मित्र स्टैण्टन ने उनकी शैय्या के पास खड़े हुए लोगों से धीमे स्वर में कहा—

'अब वह युगों-युगों की निधि हो गये हैं।' . . .
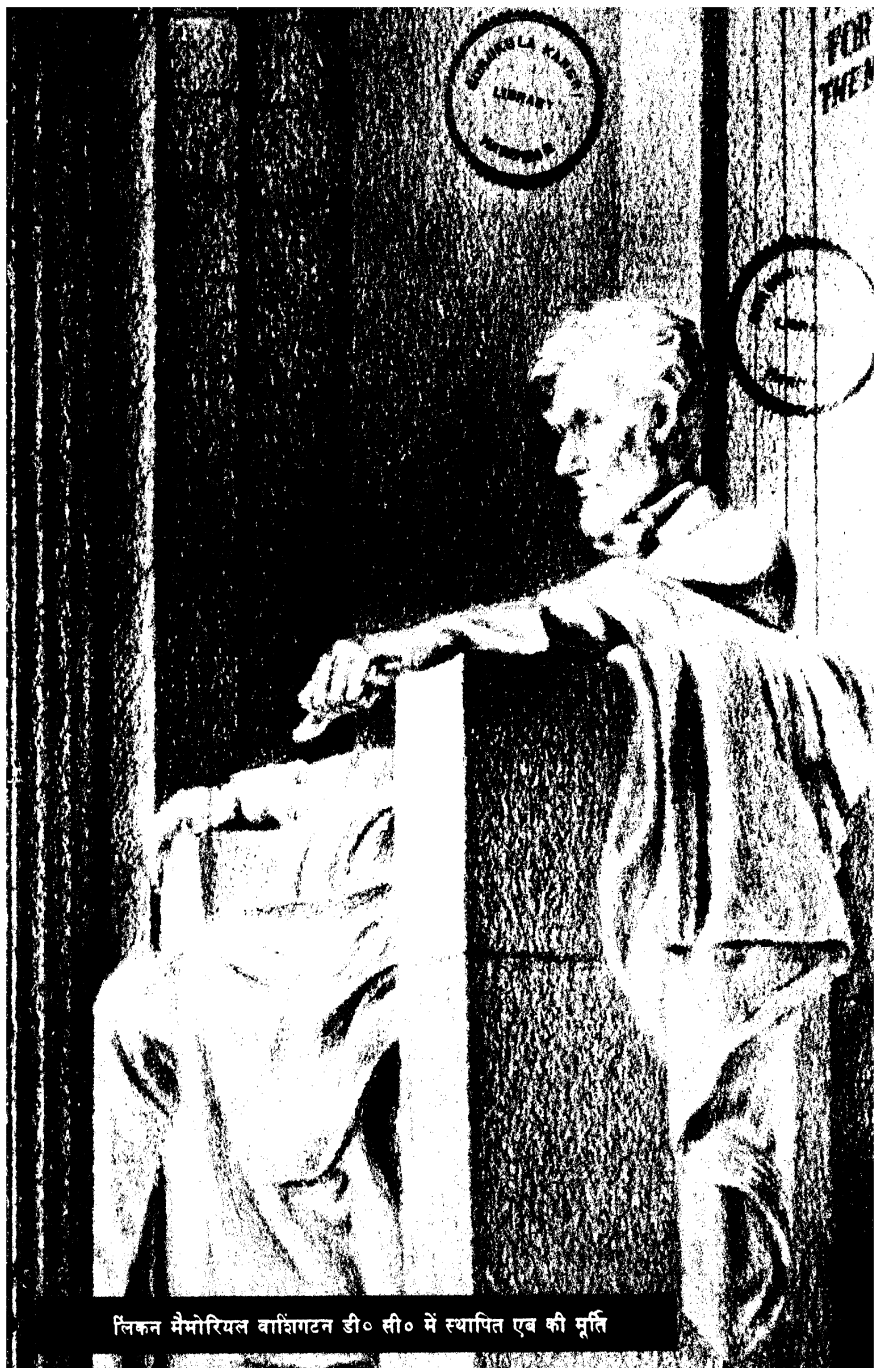
लिंकन मैमोरियल वाशिंगटन डी० सी० में स्थापित एब की मूर्ति